ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in October 2021, iajesm2014@gmail.com

डॉ0 रामनिवास 'मानव' का व्यक्तित्व एवं मानववाद

डॉ0 स्वाति रैया, सहायक आचार्य, वनस्थली विद्यापीठ

परिचयात्मक विश्लेषण

अल्पायु में ही बालक रामनिवास को भी बदहाली ने घेर लिया था। गांव से दूर, खेत में बने 'फार्म हाउस' नुमा घर में रहकर प्राकृतिक सौन्दर्य और अनुपम वेभव से ऐसी मित्रता हुई कि बालक रामनिवास कब प्रकृति–प्रेमी बना, ज्ञात ही नहीं हुआ। ऐसे मनोहारी दिनों की मिठी स्मृतियां कुरेदते हुए डॉ0 'मानव' आज भी कह उठते हैं– ''जीवन में मैं कभी प्रसन्न था, तो केवल उन्हीं दिनों। घर–भर का भरपूर प्यार मुझे मिलता था। माता–पिता पलकों पर बिठायें रहते थे, तो बहनें जान लुटाती थीं। ''

उन घटनाक्रमों को बताते समय न तो वह स्वयं को छोटा महसूस करते हैं और न ही किसी घटना पर परदा डालने की कोशिश करते हैं, वरन् उन प्रसंगो को सुनते हुए ऐसा अनुभव होता है कि डॉ0 'मानव' उन संकटो तथा संघर्षो को और उनके एहसास को अपनी स्मृति के एलबम में सुरक्षित रखना चाहते हें।

परिचयात्मक शोध का महत्व

सत्य की पक्षधरता इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की सबसे बड़ी विशेषता रही है। हाशिये पर धकेले जा रहे आम आदमी की पीड़ा और शोषक स्थितियों के प्रति जमकर विरोध इनकी कृतियों में पग–पग पर होता है। डॉ0 'मानव' की दृष्टि में स्वस्थ एवं समाज के लिए हितकर परम्पराओं के प्रति सम्मान है लेकिन अहितकर, सड़ी–गली परम्पराओं को यह अपनी कबीराई शैली में तोड़ते चले जाते है। गौड़ ब्राह्मण–परिवार में जन्म लेकर भी, इनकी उच्चता और कुलीनता, इनके निम्नवर्ग के साथ जुड़ाव में कभी बाधक नहीं बनी। सन् 1976–82 तक डॉ0 'मानव' अम्बाला स्थित पूर्व–परीक्षा प्रशिक्षण–केन्द्र में केवल हरिजन छात्रों को परीक्षा की तैयारी करवाने में कार्यरत थे, ताकि वे आगे बढ़कर अपने–आपको मुख्यधारा का हिस्सा बना सकें। ओप्रकाश 'बनमाली' डॉ0 'मानव' से उनकी भेंट के सम्बन्ध में लिखते हैं – डॉ0 'मानव' के मकान के ड्राइंग रूम मं पांव रखते ही ढेरों पदकों, ट्राफियों औ सम्मान–सूक उपहारों पर बरबस निगाह जाती है। इमने उनसे पूछा कि क्या वे सम्मान–चिहन ही उनके कृतित्व की 'रिकग्नीशन' (स्वीकृति) हैं, तो बेलाग जवाब था–''मैं इन पदकों और सम्मानस्वरूप प्रदत्त ट्रॉफियों का विशेष महत्त्व नहीं देता, चाहे इनसे मेरी रचनाधर्मिता को अकादमिक स्वीकृति मिली है। मैं अपने लेखन–कर्म की 'रिकग्नीशन' तभी मानता हूं, जब मेरी रचना मेरे पाठक के मन में मेरी पहचान बनाती है। मुझे सन्तोष है कि मेरी रचना के पाठक हिसार से हैदराबाद और बिहार, बंगाल, नेपाल तक मिल जाते हैं।

देश में उपभोक्ता–अदालत तथा सूचना का अधिकार कानून के बनते ही, इनका उपयोग करने वाले जागरूक नागरिकों की सूची में, डॉ0 'मानव' का नाम भी, सम्मिलित है। अपनी सक्रिय समाजसेवा के कारण यह वर्षो तक जिला कष्ट निवारण–समिति, हिसार के विशेष आमन्त्रित सदस्य भी रहे। स्वतन्त्रता की 40वीं तथा 50वीं वर्षगांठ के सुअवसर पर, अपनी संस्था द्वारा, दो बार हरियाणा के क्रमशः 51 तथा 101 स्वतन्त्रता–सेनानियों को सम्मानित कर, इन्होंने गैर–सरकारी क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय कार्य किया है।

इनके लिए 'मानव' उपनाम का प्रयोग इसलिए किया गया है कि हर व्यक्ति पहले मनुष्य या मानव है। जिसमें मानव–धर्म को निभाने की क्षमता होती है, वही सही अर्थ में मानव है। मानवीय शोषण, फिर चाहे वह परम्परा का हो या विचारों का, डॉ0 'मानव' ने उसका प्रबल विरोध किया, क्योंकि यह प्राचीन के समर्थक होने पर भी, उसक रूढ़ियों और जड़ता के कायल नहीं हैं इन्होने अपने मानववाद के लिए किसी दर्शन या विचारधारा का आश्रय नहीं लिया है। यह सदैव सामाजिक न्याय के लि खड़े दिखाई देते हैं। स्त्री–पुरूष समानता के यह सदा पैरोकार रहे है। निश्छल स्वभाव के कारण इनको स्पष्टवादी होना पड़ा है। अपने स्वभाव के सन्दर्भ में स्वयं डॉ0 'मानव' का कहना है– ''अपने स्वभाव का मैं क्या कर सकता हूं। छल–कपट, धोखा, विश्वासघात, कुछ भी तो नहीं आता मुझे। न अवसर का लाभ उठाना सीखा और न मुखौटे लगाकर अभिनय करना। लोग आयेश मिले, काम निकाला और चलते बने। मैं रह गया खड़ा वहीं–का–वहीं, वैसे–का वैसा। आज भीड़ में भी अपने को अकेला पाता हूं। दूर तक कोई मित्र नहीं, कोई अपना नहीं। सच्ची बात तो यह है कि न तो जीना आया और नही यह दुनिया ही मुझे रास आई।''

परिचयात्मक शोध के सोपान

''कॉलेज के दिनों को याद करके तो मेरे भी रोएं खड़े हो जाते हैं किराया अधिक होने के कारण बस से नारनौल नहीं जाता था और सांय ट्रेन से लौटता था। सर्दी हो या गर्मी, 'अद्धे' का समय साढे छः बजे निश्चित था। मुझे घर से चार किलोमीटर पैदल अटेली जाकर उसे पकड़ना होता था। सर्दियों में तो सुबह इतना अंधेरा होता था कि अनुज, सत्यवीर दूर तक मुझे छोड़ने जाता था। वापसी ट्रेन का नारनौल से चलने का समय साढे तीन बजे का था। आमतौर पर घंटा–आधा घंटा विलम्ब से आती थी, फिर अटेली तक का।''समस्याओं के नुकीले पहाड़ से गुजरते हुए, डॉ0 'मानव' ने, शिक्षा–प्राप्ति के प्रति अपनी निष्ठा, लगन और परिश्रम के बूते पर बी.ए में, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की वरीयता–सूची में, पूरे प्रदेश में 13वां स्थान प्राप्त किया। कठिनाइयों के चौतरफे हमलों से आहत होते रहे, लेकिन हिम्मत नहीं हारी और अन्ततः प्रथम श्रेणी में प्रथम रहते हुए एम.ए. (हिन्दी) की उपाधि प्राप्त करने में सफल रहे।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

इनके पिता की सामाजिक सोच, देशभक्तिपूर्ण भावना, परिवार के उत्थान की कामना और कर्त्तव्यपरायणता तथा मां की सहज ममता, श्रमशीलता और अभावों से संघर्ष करने की प्रेरणा जैसे विशिष्ट गुण, डॉ0 'मानव' के स्वभाव में, सदैव दृष्टिगोचर होते है। पिता की निष्कपट सेवा–भावना तथा निर्भीकता की अंगुली पकड़क्र चले डॉ0 'मानव' ने, अपने

जीवन में, इन्हें अक्षरशः ढालने का सफल प्रयास किया है। मां की करूणा, सहृदयता और सहयोग की भावना का भी, डॉ0 'मानव' पूरी तन्मयता से अनुसरण कर, अपने सुदृढ़ स्वभाव, आदर्शभाव, कला–प्रेम, संघर्षरत रहने की प्रेरणा से निर्मित एक उच्च श्रेणी का सामाजिक बनने में सफल रहे है।

मां की ममता, करूणा और सद्भावना ने, डॉ0 'मानव' के स्वभाव पर गहरा और स्थायी प्रभाव डाला, उन्हीं के प्रभाव से इनके संस्कार इतने प्रगाढ़, सुदृढ बने।

संघषशीलता ने ही साधारण मानव को विराट 'मानव' बनाया है। ''वस्तुतः रामनिवास 'मानव' के लिए संघर्ष जीवन की नियति रहा है। जन्म से आज तक शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक व आर्थिक स्तरों पर संघर्षरत रहे। यह संघर्ष ही कवि की प्रेरणा है और प्राण भी। अभावों ने उसे नई अनुभूतियां दी हैं, तो समस्याओं ने नये संस्कार।'' संस्कार और स्वभाव की सुदृढ़ता का ज्वलन्त उदाहरण डॉ0 'मानव' से बेहतर कहीं और मिलना दुर्लभ ही है। इन्हें जो संस्कार मिले, उनका वरण अपनी आत्मा और व्यवहार में किया। फिर उन संस्कारों के अनुरूप ही व्यक्तित्व और कृतित्व का भव्य स्वरूप सामने आना स्वाभाविक था।

डॉ0 'मानव' के उत्कृष्ट संस्कार और स्वभाव का प्रमाण इनके द्वारा घोषत की गई इनकी 'वसीयत' में देखा जा सकता है, जिसमें इन्होंने मरणोपरान्त अपनी नश्वर देह के उपयोगी अंगो का निर्धन जरूरतमंदो को दान कर देने की घोषणा की है।

अभिप्राय यह कि डॉ0 रामनिवास 'मानव' उस दुर्लभ श्रेणी के व्यक्तियों में आते है, जो हाथों की रेखाओं पर विश्वास कर भाग्य का रोना नहीं रोते, अपितु सतत प्रयास, कड़ी मेहनत और सुदृढ़ आस्था से भाग्य–रेखाओं को बदलने में विश्वास रखते है। यही कारण है कि आज डॉ0 'मानव' जिस मुकाम पर खड़े दिखाई देते हैं, वहाँ यह अपनी और केवल अपनी सुदृढ़ इच्छाक्ति, अथक परिश्रम और कर्त्तव्यनिष्ठा से ही पंहुचने में सफल हुए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 सुभाष रस्तोगी, डॉ0 रामनिवास 'मानव' : सृजन के आयाम
2. डॉ0 रामनिवास 'मानव' के शैक्षिक प्रमाण–पत्र
3. डॉ0 रामनिवास 'मानव' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
4. योगेन्द्रप्रसाद मिश्र, शब्द–शब्द समिधा
5. शब्दशिल्पी (स्मारिका)
6. डॉ0 रामस्नेहीलाल 'यायावर', शब्द–शब्द समिधा

9 8 8 0 1 5 8 1 4 SEA 9 3 0 9 4 1 5 8 1 4
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY